आदौ मङ्गलाचरणम् ।

श्रीगणेशाय नमः ॥ वन्दे शैलसुतापतिं भयहरं मोक्षप्रदं प्राणिनां मोहध्वान्तसमूहभञ्जनविधौ प्राभास्करं चान्वहम् । यद्बोधोदयमात्रतः प्रविलयं विघ्नस्य शैलव्रजा यान्त्येवाखिलसिद्धयः प्रतिदिनं चाद्यन्तहीनं परम् ॥ १ ॥

यं ध्यायन्ति मुनीश्वराः प्रतिदिनं संयम्य सर्वेन्द्रियाण्यर्वाक् तीर्थ-जलाभिषिक्तशिरसो नित्यक्रियानिर्वृताः । षट्चक्रादि विचारसार-कुशला नन्दन्ति योगीश्वराः तं वन्दे परमात्मरूपमनघं विश्वेश्वरं ज्ञानदम् ॥ २ ॥

दो० करों बन्दना ब्रह्मको , जो अनन्त निजरूप ।
जेहि जाने जग भ्रम सकल , मिटै अन्धतम कूप ॥
नाम रूप जामें नहीं , नहीं जाति अरु भेद ।
सो मैं पूरण ब्रह्म हूं , रहित त्रिविध परिछेद ॥
ब्रह्मभाग जो उपनिषद , ताका करूं विचार ।
भाषा में तिस अर्थको , लखै सकल संसार ॥
सन्त संग से जो लख्यो , सो मैं करूं बखान ।
परमानन्द सहाय ते , जाने सकल जहान ॥
पुरी अयोध्या के निकट , अकबरपुर है गांव ।
जन्मभूमि मम जान तू , जालिमसिंहहि नांव ॥

यह संसार असार महाअपार समुद्र है, इसके पार होने के लिये उपनिषद् अद्भुत अलौलिक अद्वितीय नौका है, जिसमें बैठकर असंख्य सज्जन मुमुक्षुजन विना प्रयासही ऐसे दुस्तर सागरके पार होगये हैं, और होते जाते हैं, और भविष्यत्काल में होंगे, जो मुमुक्षुजन हैं

UNIVERSITÄTS-BIBLIOTHEK HEIDELBERG
http://digi.ub.uni-heidelberg.de/diglit/jalimasimha1930/0007
© Universitätsbibliothek Heidelberg
gefördert durch die DFG